

## स्त्री का विश्वास

एक स्थान पर एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी बड़े प्रेम से रहते थे। किन्तु ब्राह्मणी का व्यवहार ब्राह्मण के कुटुम्बियों से अच्छा नहीं था। परिवार में कलह रहता था। प्रतिदिन के कलह से मुक्ति पाने के लिये ब्राह्मण ने मां-बाप, भाई-बहिन का साथ छोड़कर पत्नी को लेकर दूर देश में जाकर अकेले घर बसाकर रहने का निश्चय किया।

यात्रा लंबी थी। जंगल में पहुँचने पर ब्राह्मणी को बहुत प्यास लगी। ब्राह्मण पानी लेने गया। पानी दूर था, देर लग गई। पानी लेकर वापिस आया तो ब्राह्मणी को मरी पाया। ब्राह्मण बहुत व्याकुल होकर भगवान से प्रार्थना करने लगा। उसी समय आकाशवाणी हुई कि---"ब्राह्मण! यदि तू अपने प्राणों का आधा भाग इसे देना स्वीकार करे तो ब्राह्मणी जीवित हो जायगी।" ब्राह्मण ने यह स्वीकार कर लिया। ब्राह्मणी फिर जीवित हो गई। दोनों ने यात्रा शुरू करदी।

वहाँ से बहुत दूर एक नगर था। नगर के बारा में पहुँचकर ब्राह्मण ने कहा - "प्रिये! तुम यहीं ठहरो, मैं अभी भोजन लेकर आता हूँ।" ब्राह्मण के जाने के बाद ब्राह्मणी अकेली रह गई। उसी समय बारा के कूएँ पर एक लंगड़ा, किन्तु सुन्दर जवान रहट चला रहा था। ब्राह्मणी उससे हँसकर बोली। वह भी हँसकर बोला। दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। दोनों ने जीवन भर एक साथ रहने का प्रण कर लिया।

ब्राह्मण जब भोजन लेकर नगर से लौटा तो ब्राह्मणी ने कहा---"यह लँगड़ा व्यक्ति भी भूखा है, इसे भी अपने हिस्से में से दे दो।" जब वहाँ से आगे प्रस्थान करने लगे तो ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से अनुरोध किया कि- "इस लँगड़े व्यक्ति को भी साथ ले लो। रास्ता अच्छा कट जायगा। तुम जब कहीं जाते हो तो मैं अकेली रह जाती हूँ। बात करने को भी कोई नहीं होता। इसके साथ रहने से कोई बात करने वाला तो रहेगा।"

ब्राह्मण ने कहा- "हमें अपना भार उठाना ही कठिन हो रहा है, इस लँगड़े का भार कैसे उठायेंगे?"

ब्राह्मणी ने कहा- "हम इसे पिटारी में रख लेंगे।"

ब्राह्मण को पत्नी की बात माननी पड़ी।

कुछ दूर जाकर ब्राह्मणी और लँगड़े ने मिलकर ब्राह्मण को धोखे से कूँ में धकेल दिया। उसे मरा समझ कर वे दोनों आगे बढ़े।

नगर की सीमा पर राज्य-कर वसूल करने की चौकी थी। राजपुरुषों ने ब्राह्मणी की पटारी को जबर्दस्ती उसके हाथ से छीन कर खोला तो उस में वह लँगड़ा छिपा था। यह बात राज-दरबार तक पहुँची। राजा के पूछने पर ब्राह्मणी ने कहा - "यह मेरा पति है। अपने बन्धु-बान्धवों से परेशान होकर हमने देस छोड़ दिया है।" राजा ने उसे अपने देश में बसने की आज्ञा दे दी।

कुछ दिन बाद, किसी साधु के हाथों कूँ से निकाले जाने के उपरान्त ब्राह्मण भी उसी राज्य में पहुँच गया। ब्राह्मणी ने जब उसे वहाँ देखा तो राजा से कहा कि यह मेरे पति का पुराना वैरी है, इसे यहाँ से निकाल दिया जाये, या मरवा दिया जाये। राजा ने उसके वध की आज्ञा दे दी।

ब्राह्मण ने आज्ञा सुनकर कहा- "देव! इस स्त्री ने मेरा कुछ लिया हुआ है। वह मुझे दिलवा दिया जाये।" राजा ने ब्राह्मणी को कहा- "देवी! तूने इसका जो कुछ लिया हुआ है, सब दे दे।" ब्राह्मणी बोली- "मैंने कुछ भी नहीं लिया।" ब्राह्मण ने याद दिलाया कि - "तूने मेरे प्राणों का आधा भाग लिया हुआ है। सभी देवता इसके साक्षी हैं।" ब्राह्मणी ने देवताओं के भय से वह भाग वापिस करने का वचन दे दिया। किन्तु वचन देने के साथ ही वह मर गई। ब्राह्मण ने सारा वृत्तान्त राजा को सुना दिया।

## श्री का विग्रह

एक भूत पर एक शूद्रों और उनकी पत्नी को प्रेम में रूठते थे। किन्तु शूद्रों का वृद्धाश्रम शूद्रों के कुटुम्बों में सम्मिलित नहीं था। परिवार में कलह रूठता था। पतिपत्न के कलह में भक्ति पात्र के लिये शूद्रों ने भंग-गण, हार-गणिन का भाष केंद्र कर पत्नी के लेकर दूर दिस में रुक कर बैठे और गमा कर रुकने का निश्चय किया।

यशु लंगी थी। अंगल में पकड़ने पर शूद्रों के गठुत प्रभु लगी। शूद्रों पानी लेने गया। पानी दूर था, दूर लग गये। पानी लेकर वापिस मुखाँडे शूद्रों के भरी पाया। शूद्रों गठुत वृकुल केकर रुगवान में प्रानुन करने लगा। उभी मभव मुकामवाणी करे कि-- "शूद्रों! यद्यि दुःखपत्रे पूर्ण का मुण हार उमे दिस भीकार करेँडे शूद्रनी स्वीविउ के रथगी।" शूद्रों ने वरु भीकार कर लिया। शूद्रों द्विर स्वीविउ के गये। दैनेँ ने यशु मुक कर दी।

वही में गठुत दूर एक नगर था। नगर के गारा में पकड़कर शूद्रों ने कहा - "पिये! उभ वहीँ रुकते, मैं वहीँ केएन लेकर मुखाँडे।" शूद्रों के रने के गार शूद्रों के वहीँ रुक गये। उभी मभव गारा के कुण पर एक लंगरा, किन्तु भुवुर एवान रुए गला रुका था। शूद्रों उभमें रुमकर गेली। वरु ही रुमकर गेला। दैनेँ एक दूमरे के गारने लगे। दैनेँ ने स्वीवन हर एक भाष रुकने का पूर कर लिया।

शूद्रों एग केएन लेकर नगर में लीएँडे शूद्रों ने कहा-- "वरु लंगरा वृक्ति ही सुपा है, उमे ही वपत्रे लिम्मे में मे दै दै।" एग वरु में मुगे प्रभुन करने लगेँडे शूद्रों ने शूद्रों में वनुरेण किया कि- "उभ लंगरु वृक्ति के ही भाष ले लो। राभा सम्मिलित कर रथगा। उभ एग कहीं रुते केँडे मैं वहीँ रुक रुकी है। गार करने के ही केरेँ नहीं देता। उभके भाष रुकने में केरेँ गार करने वालाँडे रुकगा।"

शूद्रों ने कहा- "रुमे वपत्रे हार उठाना ही कठिन है रुका है, उभ लंगरु का हार केमे उठवेंगे?"

शूद्रों ने कहा- "रुभ उमे पिएरी में राप लेंगे।"

शूद्रों के पत्नी की गार भावनी पत्नी।

कुछ दूर रुकर शूद्रों और लंगरुने मिलकर शूद्रों के पेट में कुटि में एकल दिया। उमे भरा मभाए कर वे दैनेँ मुगे गये।

नगर की भीभा पर राए-कर वभुल करने की गेकी थी। राएपुरुषेँडे शूद्रों की पएरी के एगमुभी उभके रुष में क्ति कर पिलाँडे उभ में वरु लंगरा क्लिपा था। वरु गार राए-दरगार रुक पकड़ी। राए के पुरुने पर शूद्रों ने कहा - "वरु मेरा पति है। वपत्रे गुरु-गुरुवेँ मे परमान केकर रुभने दिस केंद्र दिया है।" राए ने उमे वपत्रे दिस में गभने की मुक दै दी।

कुछ दिन गार, किभी भाए के रुषेँडे कुटि में निकाले रने के उपरांत शूद्रों ही उभी राए

में पर्यटन गया। रूढ़िवादी ने एक उम्र बर्तन टोपा उठाए गए में कहा कि यह मेरे पति का पुराना बैग है, उम्र बर्तन में निकाल दिया रखे, या भरावा दिया रखे। गए ने उम्रके वण की मुझ टिप्पणी।

रूढ़िवादी ने मुझ भुनकर कहा- "देव! उम्र भी ने मेरा कुछ लिया कम है। वह भुन लिए वा दिया रखे।" गए ने रूढ़िवादी के कहा- "देवी! तुने उम्रका एके कुछ लिया कम है, भग टि टि।" रूढ़िवादी मेली- "मेने कुछ ही नलीं लिया।" रूढ़िवादी ने वाट मिलाया कि - "तुने मेरे पूरने का मुण छान लिया कम है। मही देवता उम्रके भागी है।" रूढ़िवादी ने देवताउं के छव में वह छान वापिस करने का वादन टि दिया। किनु वादन टिने के भाष ली वह भर गरी। रूढ़िवादी ने भाग बड़ुतु गए के भुन दिया।

मनुवाट - पूगवा रूहु